शिव पूजन विधि

सामग्रीः- तांबे का पंचपात्र (अथवा कोई भी कटोरी), छोटी प्लेट; आचमनी; कलश (अथवा ग्लास); थाली (अभिषेक के लिए) नारियेल; पंचामृत-दही, दूध, शहद, घी, शक्कर। दीपक, आरती के लिए एक दीपक, कर्पूर, फूल, वस्त्र, चन्दन, अक्षत, कुंकुम, इलायची, दक्षिणा, नैवेद्य के लिए मिठाई एवं फल।

पूर्व पूजा

आचमनीयम्ः- तीन बार दाहिने हाथ में एक एक चमच जल लेकर आचमन करें ।

ओम् अच्युताय नमः, ओम् अनन्ताय नमः, ओम् गोविन्दाय नमः।

आसन शुद्धिः- यह मंत्र को बोलते हुए हाथ में थोडा जल लेकर अपने आसन पर छिड़कें ।

पृथ्वी त्वया धृता लोकाः देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

देह शुद्धिः- यह मंत्र को बोलते हुए हाथ में थोडा जल लेकर शरीर पर छिडकें।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेद् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आत्म पूजाः- अपने आपको चंदन अथवा कुंकुम का टीका लगाएं

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेद् अज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्।।

प्राणायामः- ओम् का उच्चारण करते हुए एक बार प्राणायाम करें।

गणपति ध्यानम्ः- अब हाथ जोड़कर गणेशजी का ध्यान करें।

वक्रतुण्ड महाकार्य सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

दीपक, अगरबत्ती जलाकर दाहिने हाथ में अक्षत, फूल और जल लेकर बांयें हाथ से ढककर इस प्रकार से पूजा का संकल्प करें।

संकल्पः- शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीये परार्धे, श्वेतवराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, कलियुगे, प्रथमे पादे, अस्मिन् खण्डे, अस्मिन् क्षेत्रे वर्तमाने नक्षत्रे, वसन्त ऋतौ, फाल्गुन मासे, कृष्ण पक्षे, चतुर्दश्यां तिथौ, गुरु वासरे, अहं मम उपात्तदुरित क्षयद्वारा, श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ समस्त मंगल अवाप्त्यर्थ, महाशिवरात्रि पर्व निमित्त श्रीमन्महादेवपूजनं ध्यानावहनादि षोडशोपचारैः करिष्ये।

कलश पूजाः- जल भरे कलश के उपर कुंकुम आदि लगाकर दाहिने हाथ से ढककर,

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

एक एक नाम के उच्चारण के साथ उस जल में अक्षत अथवा फूल की पंखुडी डाले।

ॐ गंगायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः।
ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः।
ॐ कावेर्यै नमः। सर्वाणि तीर्थाणि आवाहयामि। पुष्पैः पूजयामि।

इस पात्र में सभी तीर्थ का आगमन हुआ है, इस श्रद्धा के साथ इस जल को चारों ओर पूजा की सामग्री तथा आसपास के लोग पर छिड़क कर शुद्धि करें।

गुरु ध्यानम्ः- श्री गुरुदेव का ध्यान करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुस्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

महादेव ध्यानम्ः- महादेवजी का ध्यान करें।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

उत्तर पूजा

1. आवाहनः- हाथ जोडकर सामने स्थित विग्रह में भगवान का आवाहन करें।

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। आवाहयामि।

आचमन में जल लेकर सामने रखे पात्र में छोड़े तथा शिवलिंग अथवा मूर्ति को नीचे रखें अभिषेकपात्र में स्थापित करें।

2. आसनः- पुष्प में आसन की भावना करके भगवान के सामने रखें ।

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। आसनं समर्पयामि।

3. पाद्यः- आचमन (चम्मच) में जल लेकर उसमें एक फूल की पंखुडी, अक्षत, और कुंकुम डाल कर भगवान के चरण धोने की भावना करें।

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। पाद्यं समर्पयामि।।

4. अर्घ्यः- पाद्य की तरह ही अर्घ्य (भगवान के हाथ धोने की भावना करें) प्रदान करें।

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। अर्घ्य समर्पयामि।।

5. आचमनीयम्ः- शुद्धजल आचमन में लेकर समर्पित करें

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि।

6.पंचामृत स्नानम् एवं अभिषेकः-

क. पयःस्नानम्ः- दूध से स्नान कराएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। पयःस्नानं समर्पयामि।

ख. दधिस्नानम्ः- दही से स्नान कराएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। दधिस्नानं समर्पयामि।

ग. घृतस्नानम्ः- घी (एक चम्मच) से स्नान कराएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

घ. मधुस्नानम्ः- शहद से स्नान कराएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। मधुस्नानं समर्पयामि।

च. शर्करा स्नानम्ः- शक्कर से स्नान कराएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

छ. अभिषेकम्ः- रुद्राष्टक स्तोत्र (नमामीशमीशान..) अथवा किसी भी शिवस्तोत्र का पाठ् करते हुए जल व दूध से अभिषेक (एक एक चम्मच विग्रह के उपर चडाते जाएं) करें।

ज. शुद्धोदक स्नानम्ः- शुद्ध जल से स्नान कराएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

भगवान को शुद्ध कपडे से पोंछ कर उनके आसन पर स्थापित करें।

७.वस्त्रम् ः- फूल में वस्त्र की भावना करके भगवान को चड़ाएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

८. उपवीतम् ः-फूल में जनेउ की भावना करके भगवान को चड़ाएं

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। उपवीतं समर्पयामि।

९. गन्धम् ः- कुंकुम अथवा चन्दन अथवा भस्म से टीका लगाएं।

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। गन्धं समर्पयामि।

10. अक्षतान् ः- भगवान को अक्षत चड़ाएं ।

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

11. पुष्पाणि ः- भगवान को फूल चडाएं तथा भगवान के चारों ओर फूल से सजाएं।

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

अर्चना :- इक्कीस बार ॐ नमः शिवाय बोलते हुए फूल एक एक फूल भगवान के चरणों में चडाते जाएं।

12. धूपम् :- अगरबत्ती भगवान को दिखाएं।

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। धूपम् आघ्रापयामि।

(अगरबत्ती जलाएं)

13. दीपम् :- भगवान को दीप दिखाएं।

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। दीपम् दर्शयामि।

14. नैवेद्यम् :- फल, मिठाई आदि में फूल की पंखुडी रखकर गायत्री मंत्र बोलते हुए नैवेद्य अर्पित करें।

ओम् भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ओम् प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा।

आचमन में जल लेकर तीन बार भगवान के चरणों में डालें।

अमृतोपस्तरणमसि। अमृतापिधानमसि।

मध्ये मध्ये आचमनीयं समर्पयामि। नैवेद्यं निवेदयामि।।

5. पूगीफलम् :- भगवान को मुखवास (इलायची) अर्पित करें।

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। ताम्बूलं समर्पयामि।

16. स्तुति :- महादेवजी का भजन गाएं।

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। स्तुतिं भजनं च समर्पयामि।

नीराजनम् (आरती):- आरती करें।

ॐ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं।
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।

पुष्पांजलि :- भगवान के चरणों में पुष्प समर्पित करके प्रणाम करें।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये।

सहस्त्रपादाक्षि शिरोरूबाहवे ॥

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते।

सहस्रकोटि युगधारिणे नमः॥

प्रार्थना :- त्राहि मां देव देवेश तरूणेन्दु शिखामणे।

ईप्सितं देहि मे देव दयाराशे नमोऽस्तुते॥

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः। छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त राजोपचारान् समर्पयामि॥ पुष्पैः पूजयामि॥

क्षमा :- क्षमा प्रार्थना करें।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

ॐ श्रीमन्महादेवाय नमः॥

॥ हरिः ओम् तत्सत्॥

सब को प्रसाद बाटें ।